जीवन-वृत्त हमने रिकॉर्ड कर लिया। उन्होंने मुंबई के अपने संघर्ष के बारे में हमें बताया। अपने एक मित्र के बारे में बताया, जिसका बहुत बड़ा योगदान था उनके करियर को बनाने में। और अपनी रचना प्रक्रिया भी बताई। बताया कि किस तरह कहीं दूर जब दिन ढल जाये उन्होंने लिखा और किस तरह आया उनका मशहूर गैर फिल्मी गीत कुछ ऐसे भी पल होते हैं, जब रात के गहरे सन्नाटे मीठी सी नींद में सोते हैं। इंटरव्यू के बाद बाईस बरस पहले के दिनों में चर्चगेट स्टेशन की सड़कों पर टहलते हुए योगेश जी से बतियाना बहुत ही सुखद था। थोड़ा-सा विषयांतर हो जाए तब भी ये ज़रूर कहना चाहूंगा कि हमने अपने देश में साहित्यकारों, कलाकारों, खिलाड़ियों के जीवन-वृत्त को रिकॉर्ड करने या अभिलिखित करने की मेहनत और कोशिश बहुत कम की है। अपने-अपने स्तर पर हम सबको ये काम ज़रूर करते रहना चाहिए।

शुरूआती दौर के बहुत ही यादगार इंटरव्यूज़ में से एक था दादामुनि अशोक कुमार के साथ एक पूरा दिन बिताना। यूनियन पार्क चेम्बूर का दादामुनि का भव्य घर और उस घर में पसरा दादामुनि का अकेलापन। अशोक कुमार ने बताया कि कई दिन हो गये, वो घर की पहली मंजिल से नीचे नहीं उतरे हैं। सामने हॉल की खिड़की से गोल्फ-कोर्स नज़र आ रहा था। दादामुनि ने बताया कि एक ज़माने में वो वहां गोल्फ़ खेला करते थे। जब दादामुनि को ये पता चला कि मैं भी मध्यप्रदेश से ही हूं तो उन्होंने बहुत-बहुत बातें याद कीं। पंद्रह के पहाड़े का वो तरीक़ा भी- जो मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड वाले इलाक़ों में खूब चलता है--पंद्रह एकम पंद्रह दूनी तीस तिया पैंतल्ला चौको साठ पन्ने पचहत्तर छक्के नब्बे/ सत्ते पचौक, अट्ठे बीस, नौ पैंतीस धूम-धड़ाका डेढ़ सौ.....। दादामुनि से बातें करना एक पूरे युग से होकर गुज़रना था। उसमें उनके ज़माने की नायिकाओं की, बॉम्बे टॉकीज़ की बातें थीं तो उनमें किशोर कुमार भी थे। दादामुनि की शादी का रोचक किस्सा भी था और फिर ज़ईफ़ी आने के बाद का निपट अकेलापन और उदासी भी। हिंदी सिनेमा की एक इतनी बड़ी शख्सियत एक घर में महदूद। दुष्यंत का शेर याद आ गया--एक बूढ़ा जी रहा है, इस शहर में या यूं कहें/ एक अंधेरी कोठरी में एक रोशनदान है। इस इंटरव्यू के कुछ दिन बाद दादामुनि का देहावसान

“दादामुनि से बातें करना एक पूरे युग से होकर गुज़रना था। उसमें उनके ज़माने की नायिकाओं की, बॉम्बे टॉकीज़ की बातें थीं तो उनमें किशोर कुमार भी थे। दादामुनि की शादी का रोचक किस्सा भी था और फिर ज़ईफ़ी आने के बाद का निपट अकेलापन और उदासी भी। हिंदी सिनेमा की एक इतनी बड़ी शख्सियत एक घर में महदूद। दुष्यंत का शेर याद आ गया--एक बूढ़ा जी रहा है, इस शहर में या यूं कहें/ एक अंधेरी कोठरी में एक रोशनदान है।

हो गया। जब भी उनकी याद आती है तो ज़ेहन में गूंज उठता है फिल्म आशीर्वाद का गाना-जीवन से लंबे हैं बंधु/ ये जीवन के रस्ते। अभी इसी महीने जब किसी काम से दोबारा उसी घर में जाने का मौक़ा मिला तो अफसोस हुआ ये देखकर कि वो बँगला अब ख़त्म हो चुका है और उसकी जगह एक इमारत ने ले ली है। गुज़रे वक्तों की निशानियां और लोग धीरे-धीरे ख़त्म हो रहे हैं। दादामुनि से किशोर दा याद आ गए और याद आ गया कि अमित कुमार से जब इंटरव्यू किया तो जुहू में गौरी-कुंज के उसी कमरे में—जहां किशोर दा रियाज़ किया करते थे। अमित कुमार ने किशोर कुमार के वीडियो कैसेट का संग्रह भी दिखाया था- जिसमें हॉरर फिल्मों की बहुतायत थी, किशोर कुमार को हॉरर फिल्मों का बड़ा शौक़ था और ये बात मुझे उसी दिन पता चली थी। अमित कुमार का ये कहना कितना मार्मिक था कि अभी भी लगता है कि कहीं सीढ़ियों से बाबा की आवाज़ आयेगी—'ओमित, ओमित'।

आज जब ये याद करने बैठा हूं, तो कई लोगों के चेहरे याद आ रहे हैं। संगीतकार ओ.पी. नैयर जब विविध भारती आए तो तय था कि हमारे वरिष्ठ साथी अहमद वसी उनसे बातचीत करेंगे। नैयर साहब का जलवा ही अलग था, कार से उतरते ही जैसे उनकी नज़रें कुछ खोज रही थीं। कहीं एक तरफ मैं खड़ा था। जाने क्यों वो मेरी तरफ आए तो मैं पसीना-पसीना हो उठा। दरअसल वो कंधे पर हाथ रखकर चलने के लिए एक लंबा व्यक्ति तलाश रहे थे। और संयोग से मैं वो व्यक्ति बन गया। बहरहाल...इंटरव्यू वसी साहब ले रहे थे। फिर एक और वरिष्ठ साथी कमल शर्मा भी शामिल हुए। और बीच इंटरव्यू में मुझे भी भेज दिया गया। इसकी वजह ये थी कि सवालों को टालने में बेहद माहिर नैयर साहब ज़ोरदार बैटिंग कर रहे थे। और शरारती सवाल पूछने के लिए उम्र में सबसे छोटे होने की वजह से मुझे भेजा गया। दोहरा चौहरा कर सवाल फिर फिर दागे गये जिनमें से कुछ के जवाब नैयर साहब ने दिये और वो दिन मेरे लिए बड़ा यादगार बन गया। नैयर का ये कहना कितना दिलचस्प था--नैयर ने कभी किसी गाने की दो ट्यून नहीं बनायी, कभी कोई गाना दूसरी बार रिकॉर्ड नहीं किया। पहला टेक ही फाइनल रहा। या उनका रफ़ी साहब से नाराज़ हो जाने वाला और फिर बरसों बाद रफ़ी से एका हो जाने का किस्सा। उफ़। नैयर का स्टूडियो में मौजूद होना ही कितना ठसकदार था हमारे लिए।